Chapter-9

ॐ ह्रीं ॐ नमः

पर्व नवम्

उपसंहार

"कीर्ति सितांशु सुभगा भुवि पोस्फुरित;
यस्यानघं धरीकरिति मनो जनानम् ।
आनन्दापूर्वविजयान्तग सूरिभर्तुः
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ।।"

अवनि-से अनादिकालीन, अम्बर-से अनत, और अम्बुधि-से अगाध, इस असार ससारमे प्रतिसमय जन्म-मरणका अरहट्ट अविरत चल रहा है । कालचक्रकी चक्कीसे ...ना नामुमकीन है, अत नवागतुककी बिदाई (जन्म पश्चात् मृत्यु)भी आगमन तुल्य ही निश्चित ही है. लेकिन बिदा होते होते अपनी जो लकीर महापुरुषो द्वारा अकित होती है, उन चरण चिह्नोको ससार आदर-सम्मानयुक्त निगाहोसे निहारता रहता है । आदित्यका उदय हो या दीपककी रोशनी, बादलोकी बरखा हो या गिरिकदराके निर्झरोका कलनाद, वृक्षोका छाया प्रदान हो या फल प्रदान-निरन्तर परोपकारार्थलीन निसर्गके ये साथी मानव जगत समक्ष निजानदकी मस्तीकी फुहारोंको सप्रेषित करते रहते है । ठीक उसी प्रकार पूर्वांकित सीमाचिह्नोंकी प्रतिमूर्ति सदृश, वे **"अलंकार भुवः"**-युगोत्तम महापुरुष भी **"परहित निरता भवन्तु भूतगणाः।"**-की उदात्त भावनाको सजोये हुए कालजयी या मृत्युजयीकी खुमारीके साथ जीते तो है जिंदादिली से, मृत्युको भी महोत्सव बनाकर मरने पर भी अमरत्व प्राप्त कर जाते है और अमर जीवनकी सार्थक कहानीसे ससारको सदैव प्रेरणा करते रहते हैं । ऐसे मानव-महामानव-परममानवोकी प्रसूता बहुरत्ना वसुधरा समय समय पर ऐसे नरपुगवोकी भेंट द्वारा ससारको समृद्ध एव समलकृत करती रहती है ।

विश्व विश्रुत विरल विभूती :- विश्ववंद्य, सूरिपुरदर, लब्ध प्रतिष्ठ कर्मयोगी, तपागच्छ गगनमणि श्री **आत्मानंदजीम.सा.का जिनशासनमें आगमन** अर्थात् अमासकी कज्जलमयी कालरात्रिके अनतर सर्वतोमुखी प्रतिभाके आदित्यकी उज्जवल रश्मियोसे **जिनशासनोन्नतिके यशस्वी प्रभातका प्रारम्भ और उनका जिनशासनसे गमन या उनके** तेजस्वी जीवन-कवनकी जिनशासनसे कटौती अर्थात **आधुनिक इतिहासमें महत्तम न्यूनताका अहसास; उनका साहित्य सृजन** अर्थात् कुमतवादी और उनकी कुमान्यताओके विरुद्ध **अकाट्य, युक्तियुक्त तर्क- प्रमाणोंका लहराता समुद्र-साथही** साथ बहुश्रुतताकी सर्वांगिण लोकमगलके लिए **धार्मिक एवं सामाजिक गंगा यमुनाकी धारायें; तथा उनकी न्यौछावरी** अर्थात् जैनधर्मका **ध्रुवाधार स्तंभ** एव जिनमदिर-जिनप्रतिमा और उनके पूजनकी जीवत प्ररूपणाका **ज्वलंत इतिहास; उनका जीवन** अर्थात् सत्यकी गवेषणा-सशोधन-प्ररूपणा, सत्यका प्रकाश और विकास, सत्यके विचार-आचार-प्रचारके सवाहक पूजारीका जीवन, सत्यके सगी-साथी-राही, सत्यके विजेता-प्रणेताका जीवन । *इस प्रकार सत्यनिष्ठ श्री आत्मानदजीम सा की अतरग आत्मा सत्यसे लबालब भरी थी, तो बहिरग आत्माकी चारो ओर सत्यके सूर प्रवाहित थे सत्यकी ही स्वरलहरी एव लय और ताल पर केवल सत्यका ही नर्तन था ।*

सहज जन्मजात गुणोके समीकरण रूप सरलता, सहजता, उदारता, स्वाभिमान, साहसिकता, नीडरता, निश्छलता, वीरता, कार्यक्षम श्रमशीलताने **उनके उच्च चारित्रिक गठनको**, धैर्य, गाभीर्य, चातुर्य, तीक्ष्णमेधा, तीव्रस्मरण शक्ति, विशद एव गहन अध्ययन, निस्पृहता, निरभिमान, विनय, वात्सल्य, तपशीलता, अलौकिक प्रभावयुक्त-भीष्म ब्रह्मचारी तुल्य नैष्ठिक ब्रह्मचार्यादि गुणोने **उनके श्रामण्यको**, दृढ सकल्पबल, दीर्घदर्शिता, अनुशासन प्रियता, समर्थ क्रान्तिकारी पौरुषत्व, ओजस्वी वक्तृत्व, बेजोड़ तार्किकता, **सर्व दर्शनोकी** विशद एवं गहन शास्त्रज्ञ समयज्ञता, प्रगल्भ असाधारण ज्ञान प्रतिभा आदि गुणोने **उनकी प्रखर समाज सुधारकता**

एवं मंझे हुए अनुभवी धर्म नेतृत्वको; मेघ-सी गभीर-गर्जीत-सुरीली वाणी, देव सदृश अनुपम काया, सिद्धहस्त **लेखन, उत्कृष्ट-कुशाग्र कवित्व, संगीतज्ञता, चित्रकलात्मकता, विद्यामंत्रधारक सिद्धियाँ, श्री जिनेश्वर देव एवं** जिनशासनके प्रति सपूर्ण समर्पण भावादि गुणोने **उनके समग्र जीवनको** अप्रतीम एव अनूठे साजोकी सजावट प्रदान करके सुशोभित किया है । श्री आत्मानदजीम सा आचार्यत्वकी अष्ट सपदके स्वामी, षष्ठ-त्रिंशति **गुणधामी, समाजमे व्याप्त अज्ञानयुक्त सकीर्णताके कारण प्रचलित कुरूढ़ियाँ, कुरिवाज, कुरीतियोका बिछौना गोल करनेवाले और शिक्षा प्रचार द्वारा सामाजिक नवचेतनाको सचारितकर्ता एक जनरेटर तुल्य,** अनेक भव्यजीवोके प्रेरणा स्रोतके रूपमे अपनी अमर कहानी छोड गये है *आपके कर-कमलोसे वपन किया और समस्त जीवनामृतसे अभिसिंचित सविज्ञ शाखीय जैनधर्मका उपवन लहलहाते द्रुमदलोसे सुशोभित रहेगा, जिसके तरोताजा-मिष्ट फल जैन समाजको दीर्घकाल पर्यंत सदैव प्राप्त होते रहेगे ।*

जीवनाकाशका विहंगावलोकन :— ऐसे परमोपकारी, शेर-ए-पजाब पजाब देशोद्धारक श्री आत्मानदजीम के जीवनाकाशके तारक मंडल-से **वैविध्यपूर्ण** प्रसगोके विहगावलोकनके समय हमारे नयनपथको प्रकाशित करता है अनेक गुण-रश्मियोका आलोक, जिनमेसे यत्किंचित्का आह्लाद अनुभूत करे । प्रतिदिन तीनसौ श्लोक हृदयस्थकर्त्री **तीव्रयाददास्त;** यथावसर-यथोचित प्रत्युत्तर द्वारा आगतुक जिज्ञासुओको परिपूर्ण सतुष्ट करनेवाली **प्रत्युत्पन्नमतियुक्त तीक्ष्ण मेधा;** शकरके तृतीय नेत्र-सा व्यवहार करनेवाले पूज्यजी अमरसिहजीकी रास्तेमे भेट होने पर प्रेमपूर्वक विधिवत् वदना करनेवाले और एक श्वासोच्छ्वासकी क्रियाके अतिरिक्त प्रत्येक कार्योमे गुर्वाज्ञाको ही प्रमाण वा आधार--के प्रतिपादकके रूपमे प्रकाशित है **उनका विनय-गुरु-भक्ति आदि;** बचपनमे धाडपाडुओसे घरकी रक्षा करनेवाले 'दित्ता' द्वारा आजीवन केवल सत्यके सहारे ही समस्त स्थानकवासी समाजसे विरोध मोलकर और मूर्तिपू. विरोधी-धर्मलूटेरोसे एक-अकेले द्वारा जिनशासनकी रक्षा करनेमे **उनकी साहसिकता-वीरता-नीडरताका विज्ञापन** दृग्गोचर होता है । आराधना-साधना, ज्ञान-ध्यान, समाजकल्याण या शासनकी आन और शान, गुरुभक्ति या शिष्योके आत्मिक सुधार-शिक्षणादि जीवनके प्रत्येक मोड-प्रत्येक कदम-प्रत्येक पलको अनुशासन बद्ध बनाने हेतु सविशेष सतर्कता बरतनेवाले **अनुशासन प्रिय** श्री आत्मानदजीम.द्वारा भारतवर्षके समस्त जैनसघो द्वारा यतियोके वर्चस्व भग और जिनशासनकी प्रभावनाके प्रयोजनसे प्रदान किये गये **'आचार्यपद'काभी** केवल श्री सघके आदार-सम्मान और स्वकर्तव्यके भाव रूपमे स्वीकार-**आचार्य प्रवरश्रीकी निस्पृहता, निरभिमान और कर्तव्यनिष्ठाका परिचायक है।** साहित्य सेवार्थ ज्ञानभडारोके जीर्णोद्धार; ग्रन्थोकी प्रतिलिपि करवानेकी और व्यवस्था करवानेकी प्रेरणा देनेवाले **दीर्घदर्शी, युगप्रधान आचार्य** प्रवरश्री द्वारा चिरकाल पर्यंत स्थायी प्रभाव छोड जानेवाले विशाल साहित्य सृजनमे-कथिरसे कचन जैसे परमार्थोकी उद्घाटक **नवोन्मेषशालीनी बुद्धि प्रतिभाके** दर्शन होते है; तो 'तत्त्व निर्णय प्रासाद' या 'जैन तत्त्वादर्श' जैसी रचनाओमे हमे **उनकी बहुश्रुतता-सर्वदर्शन शास्त्रज्ञताकी** अभिज्ञता प्राप्त होती है। तटस्थ विचारक प श्री सुखलालजीके शब्दोमें **"महोपाध्यायजी श्री यशोविजयजीम.के पश्चात् प्रथम बहुश्रुतज्ञानी विद्वान श्री आत्मानंदजीम.सा.थे ।"** तत्कालीन साधु सस्थामे **सामाजिक सुधारकके** रूपमे अनेक सामाजिक समस्याओ पर ध्यान परिलक्षित करके समाजोन्नतिके अनेक कार्य सम्पन्न करवानेवाले **समर्थक्रान्तिकारी पौरुषत्वधारी** आचार्य प्रवरश्रीने श्रीजिनशासनकी उन्नति और जैनधर्म प्रचार-प्रसारके महदुद्देश्यसे श्री वीरचदजी गाधीको चिकागो-अमरिका भेजकर विश्व धर्ममच पर जैनधर्मकी बोलबाला करवानेवाले **समयज्ञ संतपुरुषका** नाम इतिहासमे स्वर्णाक्षरोसे अकित है । अबालाके श्री जिनमदिर प्रतिष्ठावसरकी चिताजन्य (घनेबादल घिरनेवाली) परिस्थितिमे **"मुस्लिम युवानोंकी इबादत-"या खुदा महरे कर, यह काम बाबा आत्मारामका है-जिसने हिंदु-मुस्लिम सबको एक निगाहसे देखा है"** उनकी **अनूठी लोकप्रियताकी निशानी है ।** अहमदाबादसे विहारके समय विलबसे आनेवाले नगरशेठ या बड़ौदासे विहार करनेके निर्णय पश्चात् कलकत्ताके रईस बाबू **बद्रीदासकी** विनतीकी परवाह न **करके** अपने ही निर्धारमे निश्चल रहनेकी **प्रवृत्ति** उनकी **समयकी पाबंदी और स्वतंत्र-अडग निश्चय शक्तिको** प्रस्तुत करती है ।

जन्मलग्न कुंडलीकी प्रामाणिकता :— ये और ऐसे ही धैर्य-गाभीर्य-चातुर्य-नम्रता दृढसकल्पबल-प्रगल्भ असाधारण ज्ञानादि अनेकानेक गुणालंकृत आचार्य भगवंतकी जन्म कुडली पर, ज्योतिष्चक्रके परिवेशमे दृष्टिक्षेप करनेसे हमे अभिज्ञात होता है-उनके समस्त-दृश्यादृश्य-जीवन-दृश्योका चित्राकन, अथवा जैन सिद्धान्तानुसार पूर्वोपार्जित कर्मसचयोके विपाकोदयकालीन विविधरगी वैस्मयकारी आलेखनके रूपमे उनकी जीवन शोभाका प्रदर्शन। सामान्यत ग्रहशून्य केन्द्रवाली-अत्यन्त सर्व साधारण दृश्यमान उस जन्म लग्न कुडलीको उत्कृष्ट असाधारणत्व प्रदान करनेवाला लग्न है—कुभ, राशि है—मेष, ग्रह है—योगकारक उच्चका शुक्र, बलवान सूर्य, उच्चका गुरु, सम्बन्ध है—शनि-चद्रकी प्रतियुति, शुक्र-सूर्य एव मगल-गुरुकी युति, ग्रहोका परस्पर या एकतर दृष्टिसबधोका प्रभाव कुडली स्थित विशिष्ट योग-रचना है-शखयोग, नीचभग राजयोग, गज-केसरीयोग, परिवर्तन योग, पारिजात योग, केदार योग, उपचय योग, नव-पचम योग आदि । इनके अतिरिक्त भाग्यभुवनमे केतुकी शनिके साथ युति सबध पितृसुखसे वचित करता है, तो भाग्येश योगकारक शुक्र उच्चका बनकर सूर्य-बुधकी युतिसबधसे युक्त धनभुवनमे बिराजित होनेसे भाग्यदेवी विजयमालारोपणके लिए सदैव तत्पर रही है । इस प्रकार आपके जीवनके कार्य-कलापोका प्रकाश, ज्योतिष शास्त्रके परिवेशमे उनकी जन्म-लग्न-कुडलीके अध्ययनसे उस प्राप्त कुडलीकी सत्यताको प्रमाणित करता है ।

जैनाचार्योंका परिचय-पत्र :— जिनपद तुल्य, साम्प्रतकालमे जैनधर्मका सर्वश्रेष्ठ-सम्माननीय-श्रद्धा, भक्ति, आदरका अनन्य स्थान-पद परमेष्ठिमे मध्य स्थान स्थित, जिम्मेदारी युक्त जिनशासनके वफादार सेवक, पचमहाव्रतधारी-त्रिकरण योगसे (इन्द्रिय दमन पूर्वक) सर्व सावद्य प्रवृत्तिके परिहारी, सकल विश्ववात्सल्य वारिधि-विश्वशांतिके अग्रदूत-करुणासिंधु-जीवमात्रके-जगज्जनोके तारक-तरणि, सदाचारी, समभाव समुपासक, कलुषित कषायके त्यागी, विशिष्ट सद्गुणोंसे विभूषित, विविध देशाचार विज्ञ, विभिन्न धर्मके-भिन्नभिन्न भाषाकीय, वैविध्यपूर्ण वाङ्मयके अभिज्ञाता, स्व-पर सिद्धान्तयुक्त जिनवाणीके तात्त्विक बोधमयी प्रवचन पीयूषधाराके प्रवाहक-प्रवचन **प्रभावक श्री वज्रस्वामी सदृश;** सवेग-निर्वेदजनक प्रशस्त धार्मिक कहानियोसे ओतप्रोत धर्मकथा द्वारा शासन प्रभावना करनेवाले-**धर्मकथा प्रभावक- श्री सर्वज्ञ सूरि, श्री नंदिषेण सूरी आदि** सरिखे; सर्वत्र-सर्वदा विजय प्रदायिनी, अद्वितीय वादशक्ति द्वारा सर्वत्र-सर्वसे विजय प्रापक-**वादि प्रभावक-श्री मल्लवादीदेव सूरी, वृद्धवादि सूरि आदिके** समान, सुनिश्चित-अद्भूत निमित्तज्ञान द्वारा, प्रसगानुसार उस ज्ञान प्रकाशसे शासन प्रभावना **कर्ता-निमित्त प्रभावक श्री भद्रबाहु स्वामी तुल्य;** प्रशसापात्र, आशसारहित, अप्रमत्त-तप शील-**तपप्रभावक-श्री काष्ठमुनि, धन्ना अणगारादि** जैसे, विविध और वैचित्र्यता सम्पन्न विद्याधारी-**विद्या प्रभावक श्री हेमचंद्राचार्य आदिके** समकक्ष, अनेक सामान्य तथा असामान्य लब्धि-शक्ति सम्पन्न, अनेक **सिद्धिधारी-सिद्धि प्रभावक-श्री पादलिप्तसूरिजीकी** तरह, उत्तमोत्तम साहित्य सर्जन प्रतिभा द्वारा काव्यादि अनेकविध वाङ्मय रचयिता **कवि प्रभावक-श्री सिद्धसेन दिवाकरजी, श्री हरिभद्र सुरीश्वरजी** के मानिंद अनेक प्रभावक जैनाचार्यो द्वारा जिनशासनके नभाचलने दीप्र-ज्योति-सा देदीप्यमान तेज प्राप्त किया है जिनमे प्रमुखरूपसे प्राय साहित्यिक प्रभावकोकी अग्रीमता एव बहुलता रही है ।

युग प्रभावक श्री आत्मानंदजीम.सा.के जीवन-कवनसे भी इन **सर्वतोमुखी अष्ट प्रभावक गुण सम्पन्नता** झलकती है। उनके प्रभावशाली-आकर्षण प्रवचनो द्वारा तो अनेकानेक जैन-जैनेतर श्रोताओके जीवन उन्नतिको प्राप्त हुए हैं । सरल एव यथायोग्य धार्मिक सिद्धान्तानुरूप अनेक कथाओको, रसमय शैलीमे अपनी मधुर वाणीसे प्रेषित करके आबाल-वृद्ध, साक्षर-निरक्षर सर्वके योग्य उपदेशधारा बहानेवाले धर्मकथा प्रभावक श्री आत्मानदजीम सा को अद्यावधि लोग याद करते हैं । षट्दर्शनके-सर्व जैन-जैनेतर वादियोको अकाट्य एव बेजोड तर्कशक्ति द्वारा, प्रमाण नयकी स्याद्वाद-अनेकान्तवाद शैलीके सहयोगसे निरुत्तर करके जैनधर्मकी विजय-वैजयन्ती लहरानेवाले उन वादी-प्रभावकके सकल वाङ्मयमे भी उसी प्रतिभाके दर्शन होते हैं । विशद विद्याधारी, उन तपोबली महात्माके प्रकर्ष पुण्य और मत्रादि सिद्धियोके सामर्थ्यसे अबाला शहरके श्री जिनमदिरकी प्रतिष्ठा या बिकानेरके नवयुवककी दीक्षादि अनेक असभवितताओको सभाव्य-सत्यमे पलटनेवाले शासन प्रभावनाके अनेक कार्य सम्पन्न हुए, जिनके द्वारा उन्होने लोकप्रियताके शिखर पर स्थापित कलश सदृश सम्मान अर्जित किया था ।

रसालकार, **प्रतीक-बिम्ब-छद**, राग-रागिणीके वैविध्यसाजकी सजावटसे युक्त दार्शनिक-सैद्धान्तिक एव क्रियानुष्ठानादिके **अनुरूप, साथही** परमात्माकी परम भक्ति भरपूर, भावात्मक-मार्मिक और हृदय स्पर्शी, सुदर और रसीले काव्य-**पद्य साहित्य** तथा प्र· त्पादक-नवोन्मेषशालीनी बुद्धि प्रतिभाके परिपाकको सप्रेषणीय रूपमे, प्रतिपादनात्मक अथवा खड़न-मड़न शैलीमे, तो कभी-कही प्रश्नोत्तर रूपमे षड्दर्शन और विशिष्ट रूपसे जैन दर्शनकी अनेकान्तिक **धार्मिक-तार्किक-तात्त्विक, ऐतिहासिक या वैज्ञानिक प्ररूपणा करके जिनशासनकी** उत्तमता, अनन्यता, अद्वितीयतादि **सिद्ध करनेवाले सरल-मौलिक गद्य साहित्यकी** रचना **करके** कवि प्रभावककी मानिंद अपना स्थान अष्ट प्रभावकके रूपमे स्थिर करनेवाले आचार्य भगवतके अनुपम साहित्य द्वारा सम्पन्न हिन्दी जैन साहित्यका यहाँ सिहावलोकन करवायेगे ।

श्री आत्मानंदजीम.सा.का हिन्दी जैन साहित्यमें महत्त्वपूर्ण योगदान --- पूर्वाचार्यों द्वारा रचित और सगृहित वाड्मयकी विपुलताका जो चित्राकन प.श्री लालचद्र गाधी(प्राच्य विद्यामदिर-बडौदा) द्वारा किया गया है-दृष्टव्य है. "**प्रभावक ज्योतिर्धर जैनाचार्यों द्वारा संगृहित पाटन, जैसलमेर, खंभात, बड़ौदादिके प्राचीन पुस्तक भंडारके निरीक्षणसे ज्ञात होता है, कि उनमें अनेक विध विषयोंके, विविध भाषाओंमें अप्रसिद्ध ग्रन्थ समूह इतने परिमाणमें हैं-जिनमें कितने ही ग्रन्थ अत्युपयोगी, अलभ्य या दुर्लभ, जीर्ण-शीर्ण अवस्थामें हैं-उनका यथा योग्य और श्लाघनीय प्रकाशन करने हेतु शतावधि विद्वान एक शतब्दी पर्यंत कार्यरत रहें और श्रीमान लक्ष्मीपतियों द्वारा क्रोड़ों-अरबों परिमाण द्रव्य व्यय हों, फिर भी संपूर्ण संग्रहका प्रकाशन** होना शायद ही **संभव बनें** ।"[१]- जैन साहित्यके इस विशाल अगाध महासागरमे प्राचीन भाषाये--मागधी, अर्धमागधी, प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रश आदि, राष्ट्रभाषा--हिन्दी(खडीबोली), प्रादेशिक भाषाये-व्रज, अवधि, गुजराती, राजस्थानी, मराठी, तेलुगु, कन्नड, पजाबी, उर्दू आदि, विदेशी भाषा--अग्रेजी . दे भाषाओमे प्रवाहित आध्यात्मिक क्षेत्रीय दार्शनिक-सैद्धान्तिक (तत्त्वत्रयी, आत्मिक विकासावस्थाके गुणस्थानक क्रमारोहणादि)-परमात्म भक्ति-परमात्माके विशिष्ट, अचिंत्य आत्मिक स्वरूपालेखनादि, जीवन व्यवहार क्षेत्रके नीति विषयक, राजनीति विषयक, इतिहास विषयकादि, ससार(विश्व) स्वरूप विषयक भूगोल-खगोल-गणीत, षट्द्रव्यान्तर्गत विविध विज्ञान, विशिष्ट कर्म-विज्ञानादि प्राय सर्व विषयोको समाहित कर्ता, साथही आधि-व्याधि-उपाधि रूप कर्म व्यवस्थाके निष्कर्ष रूप-सर्व कर्म क्षयावस्था अर्थात् मोक्षकी स्थिति-स्थान-लक्षण-स्वरूपादिको लक्ष्यकर्ता साहित्यिक प्रवाहोका-षड्रस भोजन तुल्य शुद्ध-सुदर-स्वादु, स्वस्थ और शिवकर आस्वाद अथवा विविधरगी, मनभावन, लुभावने आकर्षक साहित्याकनोका आह्लाद स्वयकी ज्ञेय-हेय-उपादेयताको निर्घोषित करते हुए जगज्जनोके लिए पथप्रदर्शन कर रहे है ।

साहित्यका धर्मसे घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, अत धार्मिक साहित्यके अध्ययन हेतु अध्येताका तद्विषयक ज्ञाता होना आवश्यक है । जैन हिन्दी साहित्य क्रीडागणमें आचार्य भगवतके वाणी विलासका अवलोकन करनेसे हमे अनुभव होता है कि साहित्य सृजनके समय आपकी निगाह समक्ष रचना-उद्देश्यके निम्नाकित चित्राकन प्रेरणा स्रोत बने होगे-जो उनकी रचनाओसे भी स्पष्ट होते हैं-*सस्कृत-प्राकृतके अनभिज्ञ जैनधर्म जिज्ञासुओके लिए स्वधर्मका सत्य स्वरूप प्रकट करके तात्त्विक बोध प्रदान करते हुए प्रचलित भ्रान्तियोके निवारण, निश्चय और व्यवहार मार्गका सतुलन करते हुए उनका प्रचार, पाश्चात्य सास्कृतिक प्रभावके प्रतिरोध और भारतीय सस्कृतिमे आस्था व अनुरागका उद्भव, जैनधर्म पर होनेवाले आक्षेपोका परिहार करके जैन सिद्धान्तोकी एव मूर्तिपूजादि अनेक अनु ानोकी आगमिक प्रमाण युक्ति द्वारा सिद्धि, सम्यक् दृष्टिसे सर्वधर्मोंका निष्पक्षतासे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा देश विदेशमे उत्तमोत्तम-उपादेय धर्मके सदेशको प्रसारना ।*

इन इष्ट हेतु सिद्धिके लिए आपने अपने साहित्यमे सर्वधर्म एव दर्शनके सिद्धान्तोका परीक्षण करके सर्वधर्मके शास्त्राधारोको उल्लिखित करते हुए आत्माका अस्तित्व, पुनर्जन्म, आत्माका स्वकर्मानुसार स्वत सुखदु खके भोक्ता बनना याने कर्मका कर्ता(सर्जक) और भोक्ता(विसर्जक) बनना, कर्मके सृजन-विसर्जनकी प्रक्रियाये अर्थात् कर्मविज्ञान; आत्माकी मोक्ष पर्यंत विकासावस्थाये मोक्षकी स्थिति-स्वरूपादिकी प्ररूपणा करते हुए 'मोक्ष' विषयक निर्णय, देव-गुरु-धर्म (साधु धर्म-श्रावकधर्म)का स्वरूप, श्रावकके (गृहस्थके) सोलह स. र, सृष्टिकी स्वय

सिद्धता अथा जगतका अनादि-अनत स्वरूप, एकेश्वरवाद-अद्वैतव ईश्वरका अवतारवाद, ईश्वरकी सर्वशक्तिमानता-जगत्कर्तृत्वादि ईश्वर विषयक विवेचन; जैनोका अनीश्वरवाद एव जैनोकी मूर्तिपूजाका विधि-विधान-स्वरूपादिका वर्णन, जैन एव जैनेतर धर्मोका स्वरूप-सिद्धान्त-देव-गुरुविषयक मान्यताये, वेद रचनाओकी पौरुषेयता-आर्य-अनार्यवे, विश्वके सर्व धर्मोसे जैनधर्मकी तुलना, धर्माध्ययनका उद्देश्य और प्रविधि एव निष्कर्षादि अनेकानक विषयोका विस्तृत-विश्लेषित विवेचन और विवरण किया है ।

मूल जैनागम साहित्यकी नीव प्राकृत भाषा है, तो उसपर निर्मित भव्य भुवन है संस्कृत साहित्य । जैसे नीवसे महालय सर्वांगिण स्वरूपमे श्रेष्ठ-विशद-आकर्षक-नयनाभिराम होता है, वैसे ही मूल जैनागमोके प्राकृत साहित्याधारित, सस्कृत साहित्यका विशाल जैन वाड्मय प्रत्येक विभिन्न विषयोको विशिष्ट रूपमे व्याख्यायित करके मधुर पेशलताके, साथ मनमोहक रूपमे लोकप्रिय बनकर जनताके हृदय सिहासन पर आसीन हुआ है। उसे ही नयी सजावट देनेवाले प्रादेशिक भाषा साहित्यकी अहमियत भी कम प्रशसनीय नही है । नूतन सज्जाके अभियानमे हिन्दी खडीबोलीके जैन साहित्यका विशिष्ट परिचय अत्र दृष्टव्य है ।

मध्यकालमे हिन्दी-गुजराती-मारवाडी-ब्रजादि भाषाये जब अपने अपने स्वरूपको सवारते हुए स्वस्थ हो रही थी, तब उनमे प्राप्त सामीप्य, सादृश्य और साधर्म्य आश्चर्यकारी था, जिसका असर तत्कालीन महोपाध्याय श्री यशोविजयजीम सा, श्री वीर विजयजीम, श्री चिदानदजीम, श्री आनदघनजीम आदि जैन साहित्यकारोमे भी दृश्यमान होता है । तदनन्तर श्री आत्मानदजीम के समय तक आते आते उसमे कुछ सम्मार्जित साहित्यिक रूप प्राप्त होता है, जो भारतेन्दुयुगाभिधानसे प्रसिद्ध हैं । यहाँ तक साहित्यकारोका लक्ष्य केवल धार्मिक सिद्धान्तोकी प्ररूपणा-अथवा व्याख्याये करना, योगाभ्यासादिका विधान, न्याय-तर्कादि साहित्य-पर नव्यन्यायादिके परिवेशमे नूतन साहित्य गठन, परमात्माकी विविध प्रकारसे भक्ति आदिकी रचनाओके प्रति था । सामाजिक-जन सामान्यके प्रश्नो, समस्याओ और उलझनोका सकेत भी नही मिलता है । बेशक महोपाध्यायजी श्री यशोविजयजीम ने अपने साहित्यमे तत्कालीन अव्यवस्था और अधेरके लिए चिता प्रदर्शित की है, लेकिन उनमे भी प्राधान्य तो धार्मिक रूपमे जैन समाजके उपेक्षा भावको ही मिला है । भारतेन्दु युगीन देनके प्रभावसे और स्वयकी परोपकारार्थ, तीक्ष्ण मेधासे स्वतत्र विचारधाराके फलस्वरूप श्री आत्मानदजीम सा के साहित्यमे जन-जीवनके स्पर्शका अनुभव होता हैं । युगकृत परिवेश उन्हे उस ओर आकर्षित कर गया जिसने उनके साहित्यमे धर्मादि विषय निरूपणके साथ सामाजिकता, ऐतिहासिकता, भौगोलिक या वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यको उजागर करवाया । श्री सिद्धसेन दिवाकरजीम सा ने जैसे युगानुरूप सस्कृत भाषामे न्याय एव तर्कके शास्त्रीय अध्ययनको अग्रीमता देते हुए बहुधा उसी भाषामे उन नूतन विषयक साहित्य रचना करके एक नया अभिगम स्थापित किया था, उसी तरह उनके अनुगामी श्री आत्मानदजीम सा ने भी अपने युगानुरूप हिन्दी भाषामें धार्मिकादिके साथ ऐतिहासिक या सामाजिकादि विषयोसे सलग्न जैन वाड्मय रच कर, विशेष रूपसे हिन्दी गद्य साहित्यको समृद्ध करते हुए हिन्दीभाषी जिज्ञासुओके लिए नया पथप्रदर्शन करके परमोपकार किया है। श्री सुशीलजीके अभिमतसे-**"सच्चे आत्मारामजीके दर्शन आप उनके ग्रन्थोंमें ही कर सकते हैं, जिनसे उनके अभ्यास, परिश्रम, प्रतिभाका देदीप्यमान आलोक प्रसारित होता है । उस आत्मिक तेजको अक्षर रूपमें प्रकाशमान करनेवाले उनके ये ग्रन्थ मौन रहते हुए भी सदैव अमर रहनेवाली उनकी मुखरित-जीवंत प्रतिमायें हैं ।"**[1]

उत्तर मध्यकालीन, उस अज्ञानाधकारके युगमे-प्राय सपूर्ण जैन जगतमे, महोपाध्याय श्री यशोविजयजीम के परवर्तियोमे, श्रुताभ्यास प्राय ठप सा हो गया था, तब केवल एक तेजस्वी तारक-श्री आत्मानदजीम ही टिमटिमाते हुए नयनपथमे आते है, जिन्होने अडोल आस्था और तीव्र जिनशासन अनुरागसे, बुद्धि और विचारशीलताके विशिष्ट उपयोगसे सर्वांगिण-संपूर्ण-ज्ञान प्राप्तिका अथक पुरुषार्थ किया । जब जैन साहित्य परपरामे ऐतिहासिक और वैज्ञानिक परीक्षण प्रविधियोका किसीको अदाज भी न था, ऐसे समयमे आचार्य प्रवरश्रीने आश्चर्यकारी स्मरण शक्तिसे जैन-जैनेतर वाड्मयके विशाल-गहन-गभीर वाचन, पदार्थके हार्द पर्यंत

पहुचनेमे दक्ष, तीक्ष्ण, विश्लेषणात्मक, चिन्तन-मनन शक्ति युक्त पैनी दृष्टिसे अध्ययन, शिलालेख, पत्रादिके **सूक्ष्म निरीक्षण, मनोरम प्रत्युत्पन्न मतिसे प्रश्नकर्ताको सतोषजन्य प्रसन्नतापूर्वक प्रत्युत्तर प्रदान करनेवाली** प्रतिभा सत्यनिष्ठ क्षत्रियोचित क्रान्तिकारी व्यक्तित्वका प्रताप, देशकालोचित विद्यासमृद्धि अर्थात् भूगोल-भूस्तर शास्त्रीय-वैज्ञानिक आदि तथ्योको प्रामाणित रूपमें उद्घाटित करनेवाले, नूतन सशोधन एव नव दृष्टियोके उद्धरण-उदाहरणादिके परिप्रेक्ष्यमे उभारकर अनागत युगमे जैनशासनके स्थिरत्व और वर्द्धमानत्व हेतु जिम्मेदारियोकी **परख करते हुए जैनधर्म और दर्शन-सिद्धान्त और साहित्यका महत्त्व, प्रचीनता(शाश्वतता), और एकवाक्यता स्थापित की है ।** खडन-मडनके उस युगमें सर्व दार्शनिक आक्रमणोका मुकाबला करनेके लिए मृत और जीवत, जैन और जैनेतर, आगमिक साहित्यिक प्रमाण-शास्त्र सदर्भोके समूहोके प्रचड सग्रह और लाजवाब तार्किकताका प्रयोग उनके धार्मिकादि पूर्ववर्ती एव समसामयिक ज्ञानाध्ययनके परिचयका द्योतक है, जो उनकी प्रशस्त साहित्यसेवा और समर्थ साहित्यिक प्रभ-विष्णुताको स्पष्ट करता है । लाला बाबूरामके शब्दोमे-**"उनकी रचनायें जितनी विशाल, विद्वत्तापूर्ण और दार्शनिक है, उतनी ही सीधी-सादी-सरल और मनोरंजक भी है ।"** [४].

गद्य साहित्य और उसका महत्व :— श्री आत्मानदजीम सा के विशद वाङ्मयके बृहदशको आवृत्त किया है उनके गद्य साहित्यने, जिसमे प्रतिपादित विषय पूर्णत धार्मिक और दार्शनिक होने पर भी दार्शनिकताकी क्लिष्टता-नीरसता-गहन गभीरतादि कलकोसे मुक्त, सरल और स्वच्छ शैलीमे, सुबोध उदाहरण, आकर्षण एव मनोरजक वर्णन द्वारा लोकभोग्य और लोकप्रिय बन चूके है, ऐसे ही उसमे धार्मिक जडता एव एकागी कट्टरताको छोडकर उत्तमोत्तम-बौद्धिक परीक्षणमे अव्वल श्रेणि प्राप्त, लचीला तथा प्रशिक्षुको आत्मि या जैविक उद्धारमें उपयुक्त हो सके वैसा दिलकश और आकर्षक है । पजाबी, राजस्थानी, गुजराती आदि भाषाके मुहावरे-लोकोक्तियाँ आदिके यथेष्ट उपयोगने उनकी रचनाओको साहित्यिक प्राजलता बक्ष दी हैं । **"उन्होंने अपने ग्रन्थोंमें जैन मान्यताओंका युक्तिपूर्वक, वैज्ञानिक पद्धतिसे समर्थन किया है..... (ठीक उसी प्रकार) धार्मिक-पौराणिक-आगमिक-ऐतिहासिक-भौगोलिक-भूस्तरीय आदि विषयक प्ररूपणायेंभी की गई हैं ।"** [५] उनका साहित्य एक जौहरीकी अदासे परीक्षक दृष्टिसे परीक्षित करने पर उनके नैतिक उपदेशक, समाज सुधारक, मानवतावादी एव सहनशील, करुणार्द्र-उपकारी, सच्चे महात्मन्—स्वरूपका दर्शन अनायास ही होता है, जो अध्येताको बाह्यात्मासे अतरात्माकी ओर, भौतिकतासे आध्यात्मिकताकी ओर, इहलौकिकतासे पारलौकिकताकी ओर, एवं एकान्तवादसे अनेकान्तवादकी ओर पुरुषार्थी बनानेमे प्रेरक बन गया है । उनकी रचनाओमे छाया हुआ अतचेतनाका प्रकाश अज्ञान एव असत्यादिके लौकिक अधकारको विदारण करके अलौकिक-उज्ज्वल-विकासशील-उन्नत समाजकी सरचनामे महता योगदान प्रदान करता है ।

यथा-आगमज्ञानसें अनभिज्ञ ज्ञानेप्सुको 'नवतत्त्व'से सम्बद्ध मूलागम-सदर्भोके सिधु स्वरूप **'बृहत नवतत्त्व संग्रह'**की भेट दी, तो जैन दर्शनकी तत्त्वत्रयीका स्पष्ट-सुरेख-सत्य स्वरूप एव इतर दर्शनके तत्सम्बन्धी विपरित स्वरूपके तुलनात्मक निरीक्षण हेतु **"जैन तत्त्वादर्श"** प्रस्तुत किया । 'सत्यार्थ प्रकाश'की जैनधर्म और जैनधर्मी विषयक सरासर असत्य-प्रकाशाभास-अधकारके निवारण कर्ता **"अज्ञान तिमिर भास्कर"**को प्रकट किया, तो भव्यजीवोके सम्यक्त्वमे शल्यरूप श्री जेठमलजीकी रचना 'समकितसार'से मुमुक्षु आत्माओका मार्गदर्शक-राहबर **'सम्यक्त्व शल्योद्धार'**को प्रेषित किया । जैनेतरोकी अपेक्षा जैनाचार्योके बुद्धि वैभवको प्रदर्शितकर्ता एव जैन दर्शन व साहित्यकी परीपूर्णताका यथार्थ एव तुलनात्मक निर्णय करवाने हेतु श्रेष्ठ आधार रूप छत्तीस दृढ़स्तम्भोसे सुशोभित **'तत्त्व निर्णय प्रासाद'**का निर्माण किया । चिकागोमे आयोजित विश्वधर्म परिषद'मे जैनधर्मके प्रमुख सिद्धान्तोको विश्व समक्ष प्रस्फुटित करके उनका परिचय करवाने हेतु एव जैनधर्मकी अन्यधर्मोके समकक्ष सक्षमताको प्रमाणित करनेके लिए **'चिकागो प्रश्नोत्तर'**का प्रणयन हुआ।**'चतुर्थ स्तुति निर्णय भाग-१-२'** द्वारा त्रिस्तुतिक मत प्रणेता श्री राजेन्द्र सूरिजीको चतुर्थ स्तुतिकी सार्थकता, प्रमाणिकता और प्राचीनता या

परापूर्वताका निर्णय करवाया, तो ईसाइयोंकी धर्मपुस्तकोके समीक्षात्मक अवलोकनको प्रस्तुत करके *मानवधर्मके सामने अहिंसा परमोधर्म-जनसेवाके प्रत्युत जीवमात्रकी सेवाके अभिगमको* प्रदर्शित करके जैनधर्मकी श्रेष्ठता एव उपयोगिताको सिद्ध किया है । सहज अज्ञानी, बालजीवो एव नूतन शिक्षा प्राप्त धार्मि.. गुमराहोके रहनुमा समकक्ष रचनाये-**"जैनधर्म स्वरूप", "जैनधर्म विषयक प्रश्नोत्तर"** आदिके साथसाथ अपूर्व-अनन्य एव विस्मयकारी, अनूठी ऐतिहासिक कलाकृतिके आदर्शरूप **"जैन-मत-वृक्ष"(वृक्षाकार)के** आलेखनसे अनेक कलाविदों, साहित्यिकों, इतिहासकारो, दार्शनिको एव धार्मिक जिज्ञासुओ-सर्वको आश्चर्यके उदधिमे गोते लगवाये हैं । इस प्रकार उनकी प्रत्येक रचनाओका अपना स्वतत्र, अजीबो-गरीब-अनूठा महत्त्व स्वय ही निखरता है ।

पद्य साहित्य और उसका प्रभाव :--- काव्य सरिताके छदोबद्ध ताल-लययुक्त वेगवान प्रवाहमे मस्त अलकरण और भाव लालित्यसे सुशोभित नैसर्गिक रस माधुर्यसे छलकते हृदयकी उर्मियोकी अनिर्वाच्य सुखानुभूति प्राप्त, सहज काव्यकृतिकी रचना जन्मजात काव्य प्रसादीसे लब्ध कविकी देन होती है जिनके गायक और श्रोताका अवगाहन उनकी अतरात्माको विकस्वर कर देता है-उनका रोमरोम पुलकित होकर डोलने लगता है । श्री आत्मानदजीम की मर्मस्पर्शी, गेय काव्य रचनाओमे हमे ऐसे ही नैसर्गिक, रससिद्ध एव अतरोर्मियोकी तरोंगोंको बहानेवाले कविके, दुन्यवी भावोको भूलाकर अध्यात्मके रस समुद्रमे निमज्जन करवानेमे समर्थ, कवनोका मत्रमुग्ध स्वरूप प्राप्त होता है । उन्हे एकबार सुन लेनेके पश्चात बारबार सुननेको जी ललचाता है, या उनकी पुनरावृत्तिमे ही निजानदकी उदात्त मस्तीके पूर बहते है, जैसे, राग-पीलूकी मनमोहक और आत्मिक केफ चढानेवाली रचना जितनी बार पढे, एक नयी सुवास प्रदान करती है-मानो यथार्थ रूपसे हमारी कलूषितता समाप्त हो रही हो और हमे पावनताका स्पर्श प्राप्त हो रहा हो-

"जिनवर मंदिरमें महमहतो, दश दिग् सुगंध पूरे रे,
आतम धूप पूजन भविजनके, करम दुर्गंधने चूरे रे...
भाविका; धूप पूजा अघ चूरे......." ७.

सहजानदके असाधारण शातरस-पूजसे व्याप्त पद्योका अनुभव भावकके अतरको स्वय प्रकाशसे प्रकाशित करनेवाला उनका पद्य साहित्य, **प्रबन्ध काव्य स्वरूप-खंड़काव्य श्रेणीके पूजाकाव्योंके रूपमे और मुक्तक काव्यरूप-'उपदेशबावनी'**, **'ध्यान शतक'का पद्यानुवाद 'बारह भावना स्वरूप'** आदि रचनाओमे विविध मुक्तक-छदबद्ध काव्य एव भाव प्रगीत काव्यरूपोके अतर्गत स्तवन, सज्झाय, पदादिके सग्रहरूप **'आत्म विलास स्तवनावली' 'चोबीस जिन स्तवनावली'**आदि प्राप्त होते है । जिनमे उनके जनकल्याणकारी, मानव हितेच्छुक, उपदेशक व्यक्तित्वके दर्शन होते हैं तो पूजा काव्योमे एव प्रगीत काव्यरूपोमे उनका काव्यत्व सगीतके सान्निध्यसे अनूठे भक्त हृदयके रगकी इन्द्रधनुषी आभाको प्रदर्शित करता है ।

शृगाररसके काव्योकी लौकिक मस्ती या खुमारी कुछ भिन्न स्तर और भिन्न स्वाद युक्त होती है, लेकिन, सासारिक मोहजालको समाप्त करवानेकी सहजशक्ति, साम्प्रदायिकतादि अनेक गरल प्रभावोसे मुक्त केवल सत्यानुसधान दृष्टिसे आत्म रमणताकी अनुभूतिसे प्राप्त होती है । जिसका आनदानुभव श्री आत्मानदजीम के, अपूर्व शातिपूर्ण भावोका आत्मसम्मुख मोडनेवाले, काव्योमे प्रचुरमात्रामे सम्मिलित है, क्योकि, अतरकी गहराईसे बहनेवाले आत्मिक रहस्यमय उनके काव्योसे निष्पन्न स्वर लहरी केवल **"मनमर्कटकुं शिखो, निजघर आवेजी...."** अथवा **"एक प्रभुजीके चरण शरणा, भ्रान्ति भाजी कल्पुं. . "**, **"आप चलत हो मोक्ष नगरे, मुझको राह बता जा रे.. ."**, **". . कर करुणा अर्हन् जगइद"**, **"किरपा करो जो मुझ भणी, थाये पूरण ब्रह्म प्रकाशजी . . "**[७] आदिका ही गुजन करती रहती है । इसे आप अकेले गाये या समूहमे उसका हृदयस्पर्शी गुजारव कर्णयुग्मोको सदैव आत्मरमणतामे निमज्जन करवाता है । उनके काव्योमे प्रयुक्त सरल-सहज-सामान्य शब्दो द्वारा, स्वयकी लघुलाघवी काव्यकलाके प्रभावसे असाधारण मधुरता और साहित्यिक श्रेष्ठता सम्पन्न आतर्वेदना और साध्य निकटताकी प्रतीति होती है । कही पर भी रसक्षति या लघु पार्थिवताका प्रवेश तक

होने नही पाया है । **शायद यह सभव है, कि उनकी तमन्ना** ऐसे विविध राग-रागिणियोंमे **ढले हुए कवनोके प्रचारसे निम्नकोटिके या फूटकलिया** संगीतकवनोंसे **सहृदय** भाविक भव्य जीवोको आंतर्दृष्टिकी ओर **मोड़नेकी हों** । **इसके साथ समाजकी** जागृत श्रद्धाको **स्थिरत्व प्रदानके** कारण अन्य लक्ष्य बिंदु यह भी हो सकता **है** कि, उनके विचरण क्षेत्र पजाब-राजस्थानादिमे उन दिनो प्रतिमा पूजनका विरोध अपनी चरमावस्थामे था, **अतः समाजको उस विपरित** दशासे उद्धारने **हेतु स्नात्रपूजा, अष्टप्रकारीपूजा, सत्रहभेदीपूजा** आदि पूजा साहित्य **समन्वित है** ।

उनके काव्योके अभिव्यजनात्मक दृष्टिसे परिशीलनसे प्रकट है कि उनकी रचनाये विविध देशी, शास्त्रीय राग-रागिणि और कुछ छदोके त्रिवेणी सगम स्वरूप है । मधुर लालित्ययुक्त, चित्रात्मक बिम्ब विधान या प्रतीक विधान, विभिन्न सजीव अलकारादि द्वारा भगवद्भक्ति, मुक्ति और शक्ति सामर्थ्यका प्रवाह अभिभावकको प्रभावित किये बिना नही रहता । **'बीसस्थानकपूजा' या 'नवपदपूजा'**मे तात्त्विक-दुरूह पदार्थों और प्ररूपणाओंको भी लोक हृदयमे स्थापित करनेके लिए पूजा साहित्यमे ढाला गया-लोकप्रिय बनाया गया । जिनके **'दर्शन पद मनमें बस्यो, तब सब रंगरोला....' या 'सूरिजन अर्चन सुरतरुकंद'** आदिका गुजन निशदिन कानोमें गुंजता रहता है। इस तरह जैन समाजकी ज्ञान-भक्ति और क्रियाके समन्वय सगम स्थान रूप उनका पद्य साहित्य गद्यके परिमाणमे अल्प होने पर भी उतना ही असरकारक प्रभावोत्पादक एव प्रतिभावान्-भक्त हृदयके मस्ती भरे अनुभवोंके आलेखनका रसास्वाद वाकयी कल्याणमयी है ।

निष्कर्ष :— बीसवीं **शतीके** शासनप्रभावक, प्रवचनप्रभावक, युगप्रभावक, समर्पित शासन सेवक एव सत्यनिष्ठ आध्यात्मिक उड़वीर-समाजनेता, धर्मनेता, युगप्रणेता, प्रकर्ष पुण्य प्रकाशसे उज्ज्वल यशधारी, विश्ववद्य विरल विभूतिको समर्पित श्री आशिष जैनकी श्रद्धाजलिका अश अत्र उद्धृत है-**"यदि स्वयं वीणावादिनी मां शारदा आपकी अनूठी शासनसेवाकी श्लाघा हेतु प्रशंसाओंके पर्वत रच दें या उपमाओंके सागर सुखा दें तो भी अपने भक्ति पूरित मनको तृप्त नहीं कर पायेगी । हंसते हंसते कष्टोंका आलिंगन करनेवाले अगाध आत्म शक्ति सम्पन्न आचार्यदेवके जीवन वैभवकी यह झलक सिंधुमें बिंदुसे भी न्यून है।"**[८]

इससे अधिक कोई अन्य व्यक्ति क्या कह सकता है ! मैभी इन्हीं मनोवृत्तियुक्त अनुभूत भावनाओको प्रस्तुत करते हुए इस शोध प्रबन्धको सम्पन्न करुंगी-यथा-

"स्याद्वाद भंगिभरभासुरमस्य बोधं,
भव्यांमिमान समरालसहस्त्र पत्रम् ।
शक्तो भवामि ननु वर्णयितुं कथं यत्,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम्" ॥[९]

"जय श्रीवीतराग, जय श्रीगुरुदेव"